गुरु दक्षता

शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम
(एफआईपी)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली–110002

सत्यमेव जयते
Goverment Of India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

गुरु दक्षता

शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम
(एफआईपी)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली–110002

सत्यमेव जयते
Goverment Of India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

वेबसाइटः www.ugc.ac.in

© विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

नवम्बर, 2019

सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002 द्वारा प्रकाशित।

चंदू प्रेस, डी– 97, शकरपुर, दिल्ली– 110092, फोनः +919810519841, 011–22526936

ई–मेलः **chandupress@gmail.com** द्वारा डिजाईन और मुद्रित किया गया।

प्राक्कथन

वैश्विक बाजारों, समझौतों, मूल्यों और परंपराओं के संबंध में एक राष्ट्र की भूमिका को वैश्वीकरण पुनर्परिभाषित कर रहा है। भारत में उच्चतर शिक्षा के संदर्भ में इसका विश्लेषण करने की आवश्यकता है, जो संस्थानों के बड़े नेटवर्क के साथ व्यवस्थित रूप से विस्तार कर रहा है। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में, शिक्षकों को ज्ञान अर्थव्यवस्था के इस युग में होने वाले शिक्षण और शिक्षा के तरीकों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। हमारे पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इस बात पर बल दिया कि "देश में सर्वश्रेष्ठ बुद्धि वाले लोग शिक्षक होने चाहिए।" शिक्षकों की एक संभावित कुशल पीढ़ी तैयार करना, जो देश को शिक्षा की वैश्विक मांग के साथ उच्च स्तर तक ले जा सके, यह इस समय की आवश्यकता है। यह केवल एक सुनियोजित सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से संभव है, जो वैश्विक दृष्टिकोण के साथ भारत में उच्चतर शिक्षा के भविष्य निरूपण और विकास के साथ शिक्षकों को तैयार करने में सक्षम है।

कोठारी आयोग (1964) ने टिप्पणी की है कि "भारत का भाग्य अब उसकी कक्षाओं में आकार ले रहा है, यह महज कोई वक्रपटुता नहीं है बल्कि हमें इसका विश्वास है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित विश्व में, केवल शिक्षा ही है जो लोगों की समृद्धि, कल्याण और सुरक्षा के स्तर को निर्धारित करती है" जोकि अभी भी अध्यापक शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिक है। भारत में अध्यापक शिक्षा, वर्षों से शिक्षकों को इस मिशन को आत्मसात करने और इसे प्राप्त करने की दिशा में उनका मार्गदर्शन करने के लिए प्रयासरत है। लेकिन स्कूली शिक्षा के शिक्षकों के विपरीत, उच्चतर शिक्षा का अध्यापक शिक्षण, अधिगम और आकलन में बिना कोई औपचारिक प्रशिक्षण लिए शिक्षण व्यवसाय में शामिल होता है। नीतियों, शासन और प्रशासनिक संरचनाओं के बारे में जागरूकता के साथ–साथ इन क्षेत्रों में समझ और क्षमताएं नए शिक्षकों को उनके शिक्षण और प्रबंधन कौशल में सुधार करने, उच्चतर शिक्षा संस्थानों की संस्कृति को समायोजित करने और उनकी पेशेवर जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से समझने में सहायता कर सकती हैं। शिक्षकों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे पाठ्यक्रम और शैक्षिक कार्य नीतियों की योजना बनाने, एक समतामूलक समाज के लिए नया ज्ञान पैदा करने, शैक्षिक ईमादानरी के अनुरक्षण और शिक्षण तथा व्यक्तिगत जीवन में स्थिरता को एकीकृत करने की स्पष्ट समझ रखें।

इन लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षा प्रणाली में नए शिक्षकों को शामिल करने के लिए एक व्यापक शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम (एफआईपी) विकसित करने की दिशा में संयुक्त रूप से काम कर रहे हैं। इस शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम (एफआईपी) को देश भर में फैले मानव संसाधन विकास केंद्रों (एचआरडीसी) और पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण मिशन (पीएमएमएमएनएमटीटी) केंद्रों के माध्यम से लागू किया जाएगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का सुदृढ़ मत है कि यह सामग्री रूपरेखा भारत में शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम में नए युग की शुरुआत करेगी।

मैं इस अवसर पर प्रस्तुत रूपरेखा को तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए प्रो. भूषण पटवर्धन, उपाध्यक्ष; प्रो. रजनीश जैन, सचिव; डॉ. एन. श्रवण कुमार, संयुक्त सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय; डॉ. शकीला शम्सू, ओएसडी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय; डॉ. अर्चना ठाकुर, संयुक्त सचिव; और यूजीसी के अन्य पदाधिकारियों तथा बाहरी विशेषज्ञों को धन्यवाद देता हूं।

शिक्षक दिवस
5 सिंतम्बर, 2019
नई दिल्ली

(प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह)
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
1. पृष्ठभूमि और औचित्य	5
2. परिचय	6
3. अवधि	6
4. मॉड्यूल का शीर्षक	6
5. कार्यान्वयन की कार्यनीति	6
मॉड्यूल 1: उच्चतर शिक्षा और इसका पारिस्थितिकी तंत्र	7
मॉड्यूल 2: पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाना, परिणाम आधारित अधिगम और विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली	10
मॉड्यूल 3: शिक्षण, अधिगम और आकलन	12
मॉड्यूल 4: शिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी और I – पीढ़ी का आकलन	14
मॉड्यूल 5: व्यक्तिगत–भावनात्मक विकास और परामर्श	16
मॉड्यूल 6: शोध, व्यावसायिक विकास और शैक्षिक नेतृत्व	18
मॉड्यूल 7: शैक्षिक ईमानदारी	20
मॉड्यूल 8: संवैधानिक, मानव अधिकार और मौलिक कर्तव्य	21
मॉड्यूल 9: पर्यावरण चेतना और सतत विकास लक्ष्य	23
मॉड्यूल 10: कार्यनीति योजना और प्रबंधन	24
आभारोक्ति	26

विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों/संस्थानों के शिक्षकों के लिए प्रेरण प्रशिक्षण

1. पृष्ठभूमि और औचित्य

शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली की आधारशिला होते हैं और शिक्षा की गुणवत्ता इसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्धारित और निर्भर होती है। उच्चतर शिक्षा में, गुणवत्ता और उत्कृष्टता के मुद्दों के लिए शिक्षक का विकास मुख्य है। उच्चतर शिक्षा की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिभाशाली और योग्य शिक्षकों के निरंतर प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए, एक कैरियर के रूप में शिक्षण को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिभा को आकर्षित करने और प्रोत्साहित करने के लिए एक विशेष अभियान की आवश्यकता है।

वर्तमान उच्चतर शिक्षा प्रणाली शिक्षक के केवल सम्बद्ध क्षेत्र के (विषय) ज्ञान पर ही केंद्रित है। यह शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया, अध्ययन संबंधी सामग्री और इसके उन विभिन्न साधनों पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है जो विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों में शिक्षा के अनुभव की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। अतः उच्चतर शिक्षा संस्थानों में नियुक्ति के पश्चात नव नियुक्त शिक्षक को शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम से गुजरना अनिवार्य होगा। अनिवार्य प्रेरण कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य शिक्षक को शिक्षार्थी केन्द्रित दृष्टिकोण अपनाने, आईसीटी एकीकृत अधिगम और शिक्षा और शिक्षण–अधिगम के नए शैक्षिक दृष्टिकोण, उच्चतर शिक्षा के आकलन उपकरणों के प्रति संवेदनशील बनाना एवं प्रेरित करना है। प्रेरण कार्यक्रम में शिक्षण और शोध की कार्य प्रणालियाँ (व्यवस्थित कक्षाएं, सहयोगात्मक अधिगम, केस आधरित प्रणाली), आईसीटी के उपयोग, पाठ्यक्रम संरचना और डिजाइन, लैंगिक संवेदीकरण और सामाजिक विविधता, व्यावसायिक आचार नीति, सर्वोत्तम व्यवहारों को साझा करना और उनके अध्ययन क्षेत्र में विकास को अद्यतन करना आदि शामिल होंगे। शैक्षिक उत्कृष्टता और नवाचार को बढ़ावा देने में शिक्षक विकास को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। यह प्राथमिकता वाली कार्रवाइयों में से एक है जिसका उद्देश्य प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता और निष्पादन में सुधार लाना है। अतः शिक्षक विकास कार्यक्रमों में चार संभावित प्रकार के विकास शामिल होंगेः व्यक्तिगत (अंतर वैयक्तिक कौशल, कैरियर विकास और जीवन नियोजन मुद्दे); निर्देशात्मक (पाठ्यक्रम और विकास, अनुदेशात्मक प्रौद्योगिकी); संगठनात्मक (शिक्षण को बेहतर समर्थन देने के लिए संस्थागत वातावरण में सुधार के तरीके); और व्यावसायिक (शिक्षकों को समर्थन करने के तरीके ताकि वे शिक्षण, शोध और सेवा की अपनी विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करें)।

शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम का औचित्यः

1. शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने के लिए उच्चतर शिक्षा में आईसीटी एकीकृत अधिगम और शिक्षण–अधिगम के नए शैक्षिक दृष्टिकोण, उच्चतर शिक्षा के आकलन उपकरणों के प्रति शिक्षक को संवेदनशील बनाना और प्रेरित करना।
2. अंतर–विषयक, बहु–विषयक और ज्ञान के अनुप्रयुक्त दृष्टिकोण के संदर्भ में पाठयक्रम सुधारों को कार्यान्वित करना।
3. वैकल्पिक मूल्यांकन प्रक्रियाओं को अपनाना जो छात्रों के बहु–कौशल और दक्षताओं का मूल्यांकन करने के लिए और अधिक वैज्ञानिक हों।
4. शिक्षक विकास के चार संभावित प्रकारों को बढ़ावा देनाः व्यक्तिगत (अंतर–वैयक्तिक कौशल, कैरियर विकास और जीवन नियोजन मुद्दे); अनुदेशात्मक (पाठ्यक्रम डिजाइन और विकास, अनुदेशात्मक प्रौद्योगिकी); संगठनात्मक (शिक्षण के बेहतर समर्थन के लिए संस्थागत वातावरण में सुधार के तरीके); और व्यावसायिक (शिक्षकों का समर्थन करने के तरीके ताकि वे शिक्षण, शोध और सेवा की अपनी बहु–भूमिकाओं को पूरा कर सकें)।

5. शैक्षिक उत्कृष्टता, शिक्षण नवाचार, शोध क्षमताओं और नेतृत्व कौशल को बढ़ावा देना।
6. प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता और प्रदर्शन में सुधार करना।

2. परिचय

केंद्रीय और राज्य विश्वविद्यालयों, केंद्रीय रूप से वित्तपोषित तकनीकी संस्थानों और डिग्री एवं पीजी डिग्री महाविद्यालयों में शिक्षक और अकादमिक स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए प्रेरण कार्यक्रम उन्हें विश्वविद्यालय के नए शामिल शिक्षकों के रूप में उनकी भूमिकाओं से अवगत कराएंगे। यह उन्हें शिक्षण अधिगम, अनुदेशात्मक पद्धति, आकलन और मूल्यांकन तकनीक, आईसीटी सक्षम शिक्षण अधिगम के विभिन्न सामान्य पहलुओं की ओर उन्मुख करेगा और उन्हें विश्वविद्यालय के नियमों और विनियमों, शासन और प्रशासन की मूल बातों के ज्ञान से सक्षम बनाएगा।

3. अवधि

पूरा कार्यक्रम आवासीय होगा और सभी मॉड्यूल को पूरा करने के लिए इसमें कुछ परियोजना कार्य और फील्ड दौरे सहित आदर्श रूप से 170 से 175 घंटे की आवश्यकता होगी। इसलिए कार्यक्रम की आदर्श अवधि लगभग 1 महीने (रविवार और राष्ट्रीय अवकाश को छोड़कर) होगी।

4. मॉड्यूल का शीर्षक

मॉड्यूल 1: उच्चतर शिक्षा और इसका पारिस्थितिकी तंत्र (17 घंटे)

मॉड्यूल 2: पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाना, परिणाम आधारित अधिगम और विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (20 घंटे)

मॉड्यूल 3: शिक्षण, अधिगम और आकलन (20 घंटे)

मॉड्यूल 4: शिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी और पीढ़ी का आकलन (20 घंटे)

मॉड्यूल 5: व्यक्तिगत–भावनात्मक विकास और परामर्श (20 घंटे)

मॉड्यूल 6: शोध, व्यावसायिक विकास और शैक्षिक नेतृत्व (20 घंटे)

मॉड्यूल 7: शैक्षिक ईमानदारी (10 घंटे)

मॉड्यूल 8: संवैधानिक मूल्य, मानव अधिकार एवं मौलिक अधिकार (13 घंटे)

मॉड्यूल 9: पर्यावरण चेतना और सतत विकास लक्ष्य (10 घंटे)

मॉड्यूल 10: कार्यनीति नियोजन और प्रबंधन (15 घंटे)

5. कार्यान्वयन कार्यनीति

शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम (एफआईपी) को मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) भारत सरकार की पंडित मदन मोहन मालवीय शिक्षक और शिक्षण मिशन (PMMMNMTT) योजना के अंतर्गत 62 केंद्रों तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के अंतर्गत 66 मानव संसाधन विकास केंद्र (एचआरडीसी) के माध्यम से कार्यान्वित किया जाएगा। ये केंद्र प्रति वर्ष तीन कार्यक्रम चलाएँगे जिनमें अधिकतम 40 प्रतिभागियों को प्रवेश दिया जाएगा। हालाँकि संस्थान स्थानीय मांगों के आधार पर प्रतिभागियों की संख्या के बारे में आवश्यक निर्णय लेगा।

मॉड्यूल–1: उच्चतर शिक्षा और इसका पारिस्थितिकी तंत्र

उद्देश्य:

भारतीय उच्चतर शिक्षा प्रणाली की व्यापक समीक्षा का प्रावधान करना ।

अपेक्षित अधिगम परिणाम:

प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- वैश्विक स्तर पर उच्चतर शिक्षा में रुझानों और प्रथाओं का ग्रहण करने
- भारतीय उच्चतर शिक्षा प्रणाली और साथ ही इन समस्याओं के समाधान से सम्बद्ध चुनौतियों और अवसरों को समझने
- उच्चतर शिक्षा के विकास के इतिहास को समझने और इसके विकास से सम्बद्ध विभिन्न विश्वविद्यालयों के योगदान का आकलन करने
- विश्वविद्यालय की संरचना में शिक्षकों की भूमिका की सराहना करने

फोकस क्षेत्र/विषय:

- भारत के उच्चतर शिक्षा क्षेत्र का विकास
- किसी के स्वंय के विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/संस्थान का इतिहास
- उच्चतर शिक्षा में राष्ट्रीय और वैश्विक रुझान
- दैनिक कक्षा के लिए भारतीय उच्चतर शिक्षा निहितार्थों में वर्तमान चुनौतियां और अवसर
- एक संस्थान के रूप में विश्वविद्यालय/महाविद्यालय – संरचना और कार्य
- विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के आसपास का पारिस्थिति की तंत्र–मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा के राज्य विभाग, यूजीसी, एनएएसी, एनआईआरएफ, सीईसी, सूचना पुस्तकालय नेट, विभिन्न नियामक निकाय – उनकी भूमिका के निहितार्थ
- यूजीसी अधिनियम की 2 एफ और 12 बी के अंतर्गत मान्यता
- यूजीसी, आईसीएसएसआर, आईसीएचआर, डीबीटी और गैर–सरकारी संगठनों सहित किसी भी अन्य वित्त पोषण एजेंसियों के अंतर्गत योजनाएँ जो उच्चतर शिक्षा के लिए प्रासंगिक है
- विश्वविद्यालय संरचना में शिक्षक की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझना
- भूमिकाएं और जिम्मेदारियां – अधिगम, शोध और स्थानीय समुदाय की सहायता
- छात्रों की समस्याओं का समाधान करना और शिक्षण के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण और छात्रों को सीखने के लिए प्रोत्साहन
- आचार संहिता, व्यवसायगत आचार नीति, व्यावसायिक सम्बन्ध और नेटवर्क
- विश्वविद्यालय अधिनियम, कानून, अध्यादेश और शासन में इसकी भूमिका और महत्व
- संस्थागत नियोजन एवं विकास

सुझाए गए कार्यकलाप:

व्याख्यान विधि, बुद्धिशीलता सत्र, गैर–शैक्षिक कर्मियों के साथ परस्पर संवादात्मक सत्र, केस स्टडीज।

सुझाए गए आकलन:

अधिगम के परिणामों का आकलन स्व–आकलन, फीडबैक, संस्थान के अंदर की समस्याओं को दूर करने के लिए व्यावहारिक मामलों के सौंपे गए कार्यो, उच्चतर शिक्षा से संबन्धित विभिन्न एजेंसियों के नियमों, विनियमों, अधिनियम संविधियों आदि की

व्याख्या करने की क्षमता का परीक्षण करने के लिए मौखिक और लिखित साधनों, उच्चतर शिक्षा इत्यादि से संबंधित मुद्दों के महत्वपूर्ण विश्लेषण से उच्चतर क्रम क्षमताओं में सहभागिता के माध्यम से किया जा सकता है।

सुझावये गये पाठः (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. एल्टबाच, पी. जी. (2016)। ग्लोबल पर्सपेकटीव ऑन हायर एजुकेशन,जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस
2. भूषण, एस.एंड मैथ्यू ए. (2018)। क्वालिटी एंड एक्सेलेन्स इन हायर एजुकेशन एंड मेटमोर्फिक्सः चेंजिंग नोशन्स इन एजुकेशन फॉर द फ्यूचर। सेज, पृष्ठ. 52–69
3. राइट, एस. और ग्रीनवुड, डी. जे. (2017)। रिक्रीटिंग यूनिवर्सिटीज फॉर द पब्लिक गुड पाथवेज टू ए बेटर वर्ल्डः इन लर्निंग एंड टीचिंगः द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन इन द शोसल साइनसेज
4. यूनिवर्सिटी ऑफ सरेः रोल्स एंड रेस्पोन्सिबिलिटीज फॉर फैकल्टि स्टाफ इन्वोल्व्ड़ इन लर्निंग, टीचिंग एंड पोस्टग्रेजुएट रिसर्च स्टूडेंट सपोटः देखें–https://www.surrey.ac.uk/ quality_enhancement/documents/learning_ teaching/ and_PGR_roles_2015-16_ final.pdf
5. हेनार्ड फैब्रिस, एंड डी. रोजवीयर। 2012। फोस्टरिंग क्वालिटी टीचिंग इन हायर एजुकेशनः पोलिसीज एंड प्रक्टिसेज, ओईसीडी। देखें https://www.oecd.org/ edu/imhe/ QT%20polatics%20and%20practices.pdf
6. डोहलस्ट्रॉम, ईडन 2015। एजुकेशनल टेक्नॉलॉजी एंड फैकल्टी डवलपमेंट इन हायर एजुकेशन। रिसर्च रिपोर्ट, लुइसविल, कंः ईसीएआर। देखें–http://net.educause.edu/ ir/library/pdf/ers1507.pdf
7. कैथरीन नोर्मा बुचर, (2017)। रिसोर्सेज फॉर हॉपः आइडियाज फॉर एल्टर्नेटीव्ज फ्रोम हेटरोडॉक्स हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन्सः इन लर्निंग एंड टीचिंगः द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन इन द शोसल साइंसेज, वॉल्यूम 10, इशू स्प्रिंग 2017
8. एजुकेशनल एड्मिनिस्ट्रेशन इन स्टेट्स/यूटीजः स्ट्रक्चर, प्रोसेसेज एंड फ्यूचर प्रोस्पेक्ट्स। रिपोर्ट्स ऑन 2 एन्ड ऑल इंडिया एजुकेशनल सर्वे, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग
9. फर्न थॉम्पसेट, (2017)। पेडागोगीज ऑफ रेसिस्टेंसः फ्री युनिवर्सिटीज एंड द रेडिकल रि–इमेजिनेशन ऑफ स्टडीः इन लर्निंग एंड टीचिंगः द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन इन द शोसल साइंसेज, वॉल्यूम 10, इशू 1, स्प्रिंग 2017
10. ग्रिट बी. नीलसन (2015)। फिग्रेशन वर्कः स्टूडेंट पार्टीसिपेशन, डेमोक्रेसी एंड युनिवर्सिटी रिफॉर्म इन ए ग्लोबल नोलिज इकोनोमी, ऑक्सफोर्ड, न्यूयॉर्कः बर्गहैन बुक्स
11. हेनरी ए. गिरौक्स (1988)। टीचर्स एज इंटेलेकचुएलः टुवर्ड्स क्रिटिकल पेडोगॉजी, बर्गिन एंड गारवे, वेस्टपोर्ट लंदन
12. जे.बी.जी. तिलक (2003)। एजुकेशन, सोसाइटी एंड डवलपमेंट–नेशनल एंड इन्टरनेशनल पर्सपेक्टीव्ज, नई दिल्ली, एपीएच पब्लिशिंग
13. एजुकेशनल पोलिसीज इन इंडिया। एनालिसिस एंड रिव्यू ऑफ प्रॉमिस एंड परफोर्मेंस, नई दिल्लीः एनयूईपीए
14. एम.एल.सोबती (1987)। फाइनेंशियल कोड फॉर युनिवर्सिटी सिस्टम, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग
15. ओ.पी.गुप्ता, हायर एजुकेशन इन इंडिया सिंस इंडिपेंडेंस, यूजीसी एंड इट्स एप्रोच, इंपेक्ट पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली

16. फिलिप जी अल्बाच, (2016)। ग्लोबल पर्सपेक्टीव ऑन हायर एजुकेशन, जोहन्स होप्किंस युनिवर्सिटी प्रेस

17. सारा एम्सलर, (2017)। 'इनसेन विद करेज': फ्री यूनिवर्सिटी एक्सपरीमेंट्स एंड द स्ट्रगल फॉर हायर एजुकेशन इन हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिवरूइन लर्निंग एंड टीचिंगः द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन इन द शोसल साइंसेज, वॉल्यूम 10, इशू 1, स्प्रिंग 2017

18. वी. रस्ट और एस. बागले (एडिशन) (2010)। हायर एजुकेशन, पॉलिसी, एंड द ग्लोबल कंपटीशन फेनोमेनन, पालग्रेव मैकमिलन

19. सुसन राइट और डेविडजे. ग्रीनवुड, (2017)। रिक्रियेटिंग युनिवर्सिटीज फॉर द पब्लिक गुड पाथवेज टू ए बेटर वर्ल्डः इन लर्निंग एंड टीचिंग : द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन इन द शोसल साइंसेज, वॉल्यूम 10, इशू 1, स्प्रिंग 2017

20. सुसन राइट और डेविडजे. ग्रीनवुड, (2017)। युनिवर्सिटीज रन फॉर, बाई, एंड विद द फैकल्टी, स्टूडेंट्स एंड स्टाफः एलटरनेटीव्ज टू द नियो–लिबरल डेस्ट्रक्टशन ऑफ हायर एजुकेशनरू इन लर्निंग एंड टीचिंगः द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन इन द शोसल साइंसेज, वॉल्यूम 10, इशू 1, स्प्रिंग 2017

मॉड्यूल–2: पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाना, परिणाम आधारित अधिगम और विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली

लक्ष्य:

पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाने, सीखने की प्रक्रिया के परिणाम और विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली में एक सक्रिय योगदानकर्ता होने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करना।

अपेक्षित अधिगम परिणाम:

मॉड्यूल के पूरा होने पर, प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- पाठ्यक्रम डिजाइन और विकास की प्रक्रिया को समझने
- परिणाम आधारित अधिगम में शामिल विचार और प्रक्रिया को समझने
- विकल्प आधारित क्रेडिट सेमेस्टर प्रणाली की बुनियादी आवश्यक विशेषताओं को समझने
- पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाते समय उद्योग/चिकित्सकों से फीडबैक को शामिल करने के तरीकों को समझना

फोकस क्षेत्र / विषय:

- पाठ्यक्रम की अवधारणा और पाठ्यक्रम पर विभिन्न दृष्टिकोण
- पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिए विचारणीय
- पाठ्यक्रम उद्देश्यों और सामग्री के संगठन को तैयार करना – सामग्री को उपयुक्त शिक्षा संसाधनों, शैक्षिक सिद्धांतों और आकलन से जोड़ना; पाठ्यक्रमों को एकीकृत करना और परस्पर सम्बद्ध करना
- अनुदेशात्मक उद्देश्यों का वर्गीकरण: ब्लूम का वर्गीकरण और ब्लूम का संशोधित वर्गीकरण
- परिणाम आधारित अधिगम का प्रयोग करते हुए छात्र मूल्यांकन – विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली से संबंध और विकल्प आधारित क्रेडिट सेमेस्टर प्रणाली का इतिहास एवं विकास (CBCS)
- विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली का विचार – कार्यान्वयन के अवसर और चुनौतियाँ – अच्छे कार्यान्वयन के मामले का अध्ययन
- वार्षिक और सेमेस्टर आधारित प्रणाली की तुलना में सीबीसीएस के अवसर और चुनौतियां

कार्यकलाप:

विशेषज्ञ द्वारा पैनल व्याख्यान, व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यकलाप, प्रश्नोत्तर सत्र, पैनल चर्चा, आमंत्रित वार्ता, व्यक्तिगत कार्यकलाप, व्यक्तिगत और सामूहिक कार्य।

आकलन:

अधिगम के परिणामों का आकलन सौंपे गए कार्य, रिकॉर्डिंग, प्रक्षेपण और विश्लेषण, उद्देश्य परीक्षण, सहकर्मी आकलन, प्रस्तुतिकरण और मौखिक प्रस्तुति की रेटिंग के माध्यम से किया जा सकता है।

सुझाव गए पाठ: (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. ब्लूम, बेंजामिन, (एड.) एंड अदर्स (1965) टैक्सोनोमी ऑफ एजुकेशनल ओब्जेक्टीव्ज
2. क्लासिफिकेशन ऑफ एजुकेशनल गोल्स, हैंडबुक 1: कोग्निटिव डोमेन, न्यूयॉर्क, डेविड
3. मैके कंपनीइंक
4. जेनिस ई. जोन्स, मेटेएल. ब्रान, प्रेस्टन बी। कॉसग्रोव (2018) आउटकम–बेस्ड स्ट्रैटेजीज फॉर एडल्ट लर्निंग, आईजीआई ग्लोबल

5. एंडरसन, लॉरिन डब्ल्यू., और क्राथवोहल, डेविड आर., एड्स। 2001। ए टेकसोनोमी फॉर लर्निंग,टीचिंग एंड एसेसिंग शिक्षणः ए रिविजन ऑफ ब्लूम्स टेकसोनोमी ऑफ एजुकेशनल ओब्जेक्टीव्ज। न्यूयॉर्कः लॉन्गमैन

6. एंडरसन, लॉरिन डब्ल्यू., और सोसिनैक, लॉरेनए., एड्स. 1994. ब्लूमस टेक्सोनोमी : ए फॉर्टी–ईयर रेटरोसपेक्टीव नाइनटी–थर्ड ईयर्स ऑफ नेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ एजुकेशन। शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस

7. ई. गुनन, (2014)। यूजिंग क्लिकर्स टू कलेक्ट फोर्मेटीव फीडबैक ऑन टीचिंगः ए टूल फॉर फैकल्टी डवलपमेंट, इंटरनेशनल जर्नल फॉर द स्कोलरशिप ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग, वॉल्यूम 8, न. 1, आर्टिक्ल 11 , 2014

8. कुमार, कृष्णा (1988)। व्हाट इज वर्थ टीचिंग,नई दिल्लीः ओरिएंट लॉन्गमैन

9. मुकलेल, जे. सी. (1998), क्रिएटिव एप्रोच टू क्लासः रूम टीचिंग, नई दिल्लीः डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस

10. पाल, एच. आर. (2000)। मेथोडोलॉजीज ऑफ टीचिंग एंड ट्रेनिंगहायर एजुकेशन दिल्लीः डायरेक्ट्रेट ऑफ हिन्दी इम्प्लीमेंटेशन, दिल्ली यूनिवर्सिटी

11. आर.दर्दा, (2014)। हैंडबुक ऑन एडवांस्ड पेडागॉजी, मोनार्क यूनिवर्सिटी पब्लिकेशंस

12. यूल, जी. (2006)। द स्टडि ऑफ लेंगुएज। दिल्लीः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

13. मूर, केनेथ डी. (2005)। इफेक्टीव इंस्ट्रकशनल स्ट्रेटेजीजः फ्रोम थ्योरी टू प्रैक्टिसय नई दिल्लीः सेज

14. म्यूजीज, डैनियल एंड रेनॉल्ड्स, डेविड (2005)। इफेक्टीव टीचिंगः एविडेंस एंड प्रैक्टिस (सेकंड एडिशन) लंदनः सेज

15. सी.जे. बोंक और जे.ए. कमिंग्स, (1998)। रिकमेण्डेशंस फॉर प्लेसिंग द स्टूडेंट् एट द सेंटर ऑफ वेब–बेस्ड लर्निंग, एजूकेशनल मीडिया इन्टरनेशनल, वॉल्यूम 35, न.2, पृष्ठ 82–89

16. बार्नेट, आर. एंड कोट, के. (2005)। एंगेजिंग द करीकलमइन हायर एजुकेशन। सोसाइटी फॉर रिसर्च इन हायर एजुकेशन एंड ओपन युनिवर्सिटी प्रेस (चैप्टर्स 4 एंड सेक्शन 2)

17. लट्टूका एल. आर., एंड स्टार्क, जे.एस. (2009) : शेपिंग द कॉलेज करीकलमः एकेडमिक प्लान्स इन एक्शन।जोसी –बास (सेकंड एडिशन)

18. मून, जे. (2002)। द मॉड्यूल और प्रोग्राम डेवलपमेंट हैंडबुक। टलेज

19. यूजीसी दिशा निर्देश https%//ugc.ac.in/pdfnews/8023719_Guidelines-for-CBCS.pdf

मॉड्यूल 3: शिक्षण, अधिगम और आकलन

उद्देश्य:

शिक्षकों को उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण, सीखने और आकलन से युक्त होने में सक्षम बनाना।

अपेक्षित अधिगम परिणाम:

मॉड्यूल के पूरा होने पर प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- प्रभावी शिक्षाशास्त्र के व्यापक सिद्धांतों को समझने और शिक्षण की विभिन्न प्रणालियों को प्रभावी रूप से विश्लेषण करने
- अधिगम की परिवर्ती गति के लिए विभिन्न नवाचार कार्यनीतियों की खोज और उनकी पहचान करने
- आकलन और मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्यों/दृष्टिकोणों और साधनों की सराहना करने
- शिक्षाशास्त्र, आकलन और अधिगम के बीच सम्बन्ध–सूत्रों का पता लगाने
- शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन के लिए प्रौद्योगिकी मंचों का एकीकृत और उपयोग करने
- कार्यक्रम के सीखने के परिणामों का समाधान करने के लिए प्रभावी पाठ योजना तैयार करने

फोकस क्षेत्र/विषय:

- शिक्षा जगत को समझना: एक व्यवसाय के रूप में शिक्षण (एक शिक्षक होने के लिए योग्यताएं और आवश्यकताएं), शिक्षण को चिंतनशील अभ्यास के रूप में समझना, एक जटिल/गतिशील कार्यकलाप के रूप में शिक्षण, स्वयं के शिक्षण की पहचान
- शिक्षण में प्रौद्योगिकी की भूमिका और उपयुक्त उपयोग को समझना, इसे पारंपरिक शिक्षण के साथ सम्मिश्रित करना
- शिक्षण की कार्यनीतियाँ: शिक्षक केंद्रित और छात्र केंद्रित – उनकी शक्ति और सीमाएँ, अनुकूलित कार्य नीतियाँ, आवश्यकता, शिक्षण कार्यनीतियों, दैनिक जीवन और बड़े सामाजिक मुद्दों से जुड़ने के लिए रचनात्मक और महत्वपूर्ण शिक्षा शास्त्र के विकास में शिक्षकों की आवश्यकता, महत्व और क्षमता
- पाठ योजना – पाठ योजना लिखने के लिए मूल विचार, तर्क और विभिन्न प्रकार के कौशल और तकनीक
- प्रभावी कक्षाएं: समय प्रबंधन, सीखने में हास्य का उपयोग, दृढ़ता और मित्रता के बीच संतुलन करना
- बहुसांस्कृतिक कक्षाएं और समावेशी शिक्षाशास्त्र
- अधिगम और शिक्षार्थी: अधिगम की अवधारणा, अधिगम के परिप्रेक्ष्य–व्यवहारवादी, संज्ञानात्मक और रचनात्मकय व्यक्तिगत अंतर, अधिगम की शैली, अधिगम की सांस्कृतिक प्रासंगिकता की भूमिका
- छात्र और उनकी आवश्यकताओं को समझना – विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले छात्र, हाशिए के समुदायों के छात्र, विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्र, सीखने की कठिनाइयों वाले छात्र, असाधारण क्षमता वाले छात्र – सभी प्रकार के छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समावेशी कार्यनीतियाँ तैयार करना
- व्यक्तिगत छात्र और छात्र समूहों को परामर्श देना– कौशल और कार्यनीतियों का प्रबंधन
- आकलन और मूल्यांकन: अधिगम के लिए आकलन और अधिगम का आकलन, आकलन और मूल्यांकन के बीच के अंतर को समझना, रचनात्मक (फोर्मेटीव) और योगात्मक (समेटीव) आकलन, वस्तुनिष्ठ आकलन का महत्व, वस्तुनिष्ठ आकलन के लिए साधनों का विकास, नवीन कक्षा आकलन कार्यनीतियां

कार्यकलाप:

- व्याख्यान, आईसीटी साधन, समूह चर्चा, आकलन रूपरेखा और साधन बनाना

- डिजिटल कक्षा सत्र, मिलकर सीखना, कार्यकलाप परिवर्तन (अर्थात, कार्यकलाप के निष्पादन पर परिवर्तन), ब्लॉग बनाना, वेब पेज/वेब साइटें बनाने की मूल बातें, वेबिनार सेट आदि को व्यवस्थित करना
- आईसीटी जैसे वीडियो, टेलीविजन और मल्टीमीडिया कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, जो पाठ, ध्वनि को जोड़ता है और रंगीन, चलती हुई छवि का उपयोग चुनौतीपूर्ण और प्रामाणिक सामग्री प्रदान करने के लिए किया जा सकता है, जो छात्र को सीखने की प्रक्रिया और थोड़े समय में अमूर्त अवधारणाओं और तर्क को प्राप्त करने के काम में लगाएगा

आकलनः

1. अधिगम के परिणामों का आकलन स्व–आकलन और फीडबैक, आकलन और मूल्यांकन पर अभ्यास, आईसीटी आधारित अभ्यास, आकलन रूपरेखा और साधनों के माध्यम से किया जा सकता है।

सुझाए गए पाठः (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. ट्रेंबले, के., डी.ललनकेटे, एंड डी.रोसेवेयरे (2012) एसस्मेंट ऑफ हायर एजुकेशन लर्निंग आउटकम्स–फीजिबिलिटी स्टडि रिपोर्ट, वोल्यूम1 (डिजाइन एंड इम्प्लीमेंटेशन), ओईसीडी
2. http%//www.oecd.org/education/skills-beyond-school/AHELOFSReportVolume1.pdf
3- http%//mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/documentreports/Manual_for_Affiliated_Colleges-05122012.pdf
4. एंडरसन, एल.डब्ल्यू. एंड क्रैथहॉल, डी.आर. (2001)। ए टैक्सोनॉमी फॉर लर्निंग, टीचिंग एवं असिसिंगः ए रिविजन ऑफ ब्लूम टैक्सोनॉमी। न्यूयॉर्क। लॉन्गमैन पब्लिशिंग
5. ब्लोथम, एस. एंड बॉयड, पी. (2007)। डवलपिंग इफेक्टीव अससमेंट इन हायर एजुकेशन। ए प्रैक्टिकल गाइड। ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस
6. बोनक, सी.जे., ली, एम.एम., रीव्स, टी.सी.,एंड रेनॉल्ड्स, टी.एच. (ईडीएस)। (2015)। एमओओसीएस एंड ओपन एजुकेशन एराउंड द वर्ल्ड।ः टलेज
7. फ्राई, एच.,केटरिज, एस. एंड मार्शल, एस. (2003)। ए हैंडबुक फॉर टीचिंग एंड लर्निंग इन हायर एजुकेशन। कोगन पेज
8. जफिन, जी. (2009) अससमेंट, लर्निंग एंड जजमेंट इन हायर एजुकेशन (ईडीएस)। स्प्रिंगर
9. लट्टूका एल. आर., एंड स्टार्क, जे.एस. (2009) शेपिंग द कॉलेज करिकलमः अकेडेमिक प्लान्स इन एक्शन जोसे–बास (सेकंड एडिशन)
10. रम्स्डेन, पी. (2005)। लर्निंग टू टीच इन हायर एजुकेशन, content-taylorfrancis-com File /// C% /Users/Apf/Downloads/9780203507711_googlepreview.pdf
11. स्क्वेयर्स, जे. (2003) टीचिंग एस ए प्रोफेशनल डिस्सिप्लिन। फाल्मेर प्रेस
12. व्लोडकोव्स्की, आर. जे.; गिन्सबर्ग, एम.बी. (1995)। डाइवर्सिटी एंड मोटिवेशनः कल्चरल्ली रेस्पोंसीव टीचिंग जॉसी–बास हायर एंड एडल्ट एजुकेशन सीरीज। जोसी –बास एजुकेशन सीरीज, जॉसी–बास सोशल एंड बिहेवियरल साइंस सीरीज
13. आरब्यूक्ल, डी.एस. (1965)। काउन्सलिंगः फिलोसोफी, थ्योरी एंड प्रैक्टिस, बोस्टनः एलिन और बैकोन
14. व्लोडकोव्स्की, आर. जे. गिन्सबर्ग, एम.बी. (1995)। डाइवर्सिटी एंड मोटिवेशनः कल्चरल्ली रेस्पोंसीव टीचिंग जॉसी–हायर एंड एडल्ट एजुकेशन सीरीज। जोसी –बास एजुकेशन सीरीज, जॉसी – बास सोशल एंड बिहेवियरल साइंस सीरीज
15. वेंडरस्ट्रेटेन, राफ. (2002)। डेवीज ट्रांजेकशनल कंस्ट्रक्टीविज्म। जर्नल ऑफ फिलोसोफी ऑफ एजुकेशन। 36-233 – 246

मॉड्यूल 4: शिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी और I- पीढ़ी का आकलन

लक्ष्यः

शिक्षण और आकलन में प्रौद्योगिकी की क्षमता का उपयोग करने के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करना।

अपेक्षित अधिगम परिणामः

पाठ्यक्रम के अंत में प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगेः

- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी की क्षमता को समझना और उसका मूल्यांकन करना
- आकलन और मूल्यांकन प्रथाओं के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना
- छात्रों को बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत रूप से जानकारी देना और संप्रेषित करना
- प्रौद्योगिकी में नवीनतम विकास के साथ स्वयं को अद्यतन करने और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए उनका उपयोग करना
- शिक्षा में मुफ्त/ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर/हार्डवेयर का उपयोग सीखना
- उच्चतर शिक्षा को समृद्ध करने के लिए भारत सरकार की विभिन्न डिजिटल पहलों, विशेष रूप से ऑनलाइन पुनश्चर्या मॉड्यूल के लिए शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या कार्यक्रम (एआरपीआईटी) को समझने और उनकी सराहना करना

फोकस क्षेत्र/विषयः

- ऑनलाइन अधिगम अनुप्रयोगों और प्रणालिओं को समझना अधिगम प्रबंधन प्रणाली (एलएमएस), ई–शिक्षा अनुप्रयोग के प्रकारः ई–सामग्री, मल्टीमीडिया आधारित पारस्परिक संवाद ट्यूटोरियल, वेब आधारित व्याख्यान, ई पुस्तकें, सीखने के विषय, वर्चुअल क्लास, सिमुलेशन और वर्चुअल रियलिटी आधारित सीखने की प्रणाली, मुक्त पाठ्यक्रम वेयर (ओसीडब्ल्यू), मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओईआर), और मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम (एमओओसीएस), सामाजिक मीडिया, ऑनलाइन पुस्तकालय संसाधन
- ई–सामग्री का विकास, स्थिर ई–सामग्री विकास की मूल बातें, उद्धरण और संदर्भ, मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओईआर), आईपीआर और कॉपीराइट मुद्दे, साहित्यिक चोरी–रोधी साधन, ई–सामग्री (पहुँच, लिंग, सामाजिक इत्यादि) के विकास के लिए भारतीय संदर्भ में संवेदनशील मुद्दे
- ई–शिक्षा में भारत की पहलः एनकेसी एवं एनएमई–आईसीटी, सीबीसीएस, एमओओसी एवं स्वयं, एमओओसीः संकल्पना, संरचना, एमओओसी प्रस्ताव तैयार करना, कथानक/स्टोरीबोर्डिंग, सीखने की सामग्री तैयार करना, एमओओसी रिकॉर्डिंगके लिए प्रभावी पॉवर पॉइंट प्रस्तुतीकरण विकसित करना, डिजिटल सामग्री का निर्माण, ई–शिक्षा अनुप्रयोग/ओईआर, एआरपीआईटी विकसित करने के लिए एलएमएस एवं सीएमएस
- आईसीटी आधारित आकलन के तरीके–साधन विकसित करना और ऑनलाइन आकलन का संचालन, आकलन के डॉटप्लोट्स, मैटरिक्स विश्लेषण, वक्र फिटिंग, ग्रेड के संकलन और प्रस्तुत करने में आईसीटी, छात्रों के लिए अंक और फीड बैक के प्रबंधन में आईसीटी

कार्यकलापः

- डिजिटल कक्षा सत्र, सहयोगात्मक शिक्षा, कार्यकलाप परिवर्तन (अर्थात, कार्यकलाप के निष्पादन परपरिवर्तन), ब्लॉग बनाना, वेब पेज/वेब साइट बनाने की मूल बातें, वेबिनार को व्यवस्थित करना आदि

- आईसीटी जैसे वीडियो, टेलीविजन और मल्टीमीडिया कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, जो टेक्स्ट, ध्वनि को जोड़ते हैं और रंगीन, चल छवि का उपयोग चुनौतीपूर्ण और प्रामाणिक सामग्री प्रदान करने के लिए किया जा सकता है, जो छात्र को सीखने की प्रक्रिया में और थोड़े समय में अमूर्त संकल्पनाओं और तर्क को प्राप्त करने में लगाएगा

आकलनः

- अधिगम के परिणामों का आकलन, स्वमूल्यन और फीडबैक द्वारा किया जा सकता है. आकलन और मूल्यांकन पर अभ्यास. आईसीटी आधारित अभ्यास उपकरण और संरचना आकलन

सुझाए गए पाठः (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. आईसीटीः चेंजिंग एजुकेशन, बाई क्रिस एबॉट, रूटलेज फल्मर, 2001
2. टेक्नोलोजी, इनोवेशन, एंड एजुकेशनल चेंजः ए ग्लोबल पर्सपेकटीवः ए रिपोर्ट ऑफ द सेकंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलोजी इन एजुकेशन स्टडी, मॉड्यूल 2, बाई रॉबर्ट बी.कोजमा, इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर टेक्नोलॉजी इन एजुकेशन, 2003
3. आईसीटीइन एजुकेशनः ए क्रिटिकल लिटरेचर रिव्यू एंड इट्स इम्प्लिकेशंस, बाय फू, जो शान, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट यूजिंग इन्फोर्मेशन एंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलोजी, वॉल्यूम 9, नंबर 1, अप्रैल 1, 2013
4. मीटिंग द स्टैनडर्ड्स इन यूजिंग आईसीटी फॉर सेकंडरी टीचिंग, बाई स्टीवकेनेवेल, राउटलेज फैलमर, 2004
5. आईसीटी एंड स्पेशल एजुकेशनल नीड्सः ए टूल्स फॉर इनक्लूजनः बाई लानी फ्लोरियन; जॉनहेगार्टी, ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004
6. हिस्ट्री, आईसीटी, एंड लर्निंग इन द सेकंडरी स्कूल, बाई टेरी हेडन; क्रिस्टीनकॉन्सेल, रूटलेजफाल्मर, 2002
7. आईसीटी एंड द ग्रेटेस्ट टेक्नोलॉजीः ए टीचर्स माइंड, बाई हैदरली, एन, अर्ली चाइल्डहुड फोलियो, वॉल्यूम 13, एनुअल 2009
8. आईसीटी ड्राइवन पेड़गोगीज एंड इट्स इंपेक्ट ऑन लर्निंग आउटकम्स इन हाई स्कूल मैथेमेटिक्स बाई चंद्रा, विनेशय ब्रिस्की, जो, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पेडागोगीज एंड लर्निंग, वॉल्यूम 7, नंबर 1, अक्टूबर 1, 2012
9. इनसाइट्स इंटू इनोवेटिव क्लासः म प्रैक्टिसेज विथ आईसीटीः आइडेंटिफाइंग द इंपेटस फॉर चेंज,बाई वोंग, एमिली एम एल.य ली, सैंडी एस. सी.; चोई, टाट–हेंगय ली, टीएसजेड एनगोंन्ग, एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी, वॉल्यूम 11, नंबर 1, जनवरी 2008
10. ए मॉनिटरिंग एंड इवेल्यूएशन स्कीम फॉर एन आईसीटी–सपोर्टेड एजुकेशन प्रोग्राम इन स्कूल्स बाई रोड्रिगेज, पेट्रीओ; नुस्बाउम, मिगुएल; लोपेज, जिमेना; सिपुलेवेद, मार्कोस, एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी, वॉल्यूम 13, नंबर 2, अप्रैल 2010
11. फ्री सॉफ्टवेयर फाउंडेशनः https://www-fsf-org/

मॉड्यूल 5: व्यक्तिगत–भावनात्मक विकास और परामर्श

उद्देश्य:

प्रतिभागियों को व्यक्तिगत–भावनात्मक विकास और परामर्श में बुनियादी कौशल प्राप्त करने हेतु सक्षम बनाना।

अपेक्षित अधिगम परिणाम:

पाठ्यक्रम के अंत में प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों के साथ प्रभावी ढंग से व्यवहार करना और समझना
- शिक्षार्थियों की विविध दुनिया के अनुरूप काम करना
- शिक्षार्थियों के बीच तनाव का निपटान और प्रबंधन करना सीखना
- शिक्षार्थियों को प्रभावी ढंग से परामर्श देना

फोकस क्षेत्र/विषय:

- व्यक्तित्व और इसकी परिभाषित विशेषताएं, व्यक्तित्व का आकलन
- समायोजन समस्याओं की प्रकृति और प्रकार: शैक्षणिक, भावनात्मक और सामाजिक
- छात्र विविधता की पहचान सीखने में कठिनाई वाले छात्र, असाधारण छात्र, प्रतिभाशाली छात्र, विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले छात्र
- तनाव और विभिन्न स्तरों पर इसके प्रभाव को समझना, तनाव और समय का प्रबंधन करना, शिक्षकों के बीच कार्य–जीवन असंतुलन के परिणाम, बेहतर–जीवन संतुलन के तरीके, काम के साथ–साथ जीवन के अन्य क्षेत्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता
- बेहतर व्यक्तिगत और कक्षा समायोजन के लिए परामर्श कार्यनीतियाँ– फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक, व्यवहारवादी, गेस्टाल्टय निर्देशात्मक, गैर–निर्देशात्मक, सारग्राही (इलेक्ट्रिक), व्यक्तिगत और समूह परामर्श, परामर्श की आचारनीति और नैतिक संहिता

कार्यकलाप:

स्व–मूल्यांकन रिपोर्टों को तैयार करना और उनका रखरखाव, शिक्षार्थियों के व्यक्तिवृत्त का संग्रह करना, मार्गदर्शन और परामर्श कार्यक्रम का संचालान, नौकरी मेला/कैरियर समारोह का आयोजन, किन्हीं दो साधनों को तैयार करना और प्रशासनः परामर्श सेवाओं के संबंध में पर्यवेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि। भूमिका निर्वाह (रोल प्ले) आधारित प्रयोग और समूह गतिशीलता।

आकलन:

सीखने के परिणामों का आकलन सौंपे गए कार्य, वस्तुनिष्ठ परीक्षण, सहकर्मी आकलन के माध्यम से किया जाए।

सुझाए गए पाठः (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. अर्बुक्ल, डी. एस. (1965)। काउन्सलिंगः फिलोसोफी, थ्योरी एंड प्रैक्टिस,बोस्टनः एलिन और बेकन
2. ब्लोचर, डी. एच. (1987)। द प्रोफेशनल काउंसलर न्यूयॉर्कः मैकमिलन
3. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (1972)। हैंडबुक इन वोकेशनल गाइडेंस, नई दिल्लीः सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च एंड ट्रेनिंग इन एम्पलॉयमेंट सर्विस (सी.ई.डी.जी.ई.एंड टी), मिनिस्ट्री ऑफ लेबर एंड रिहेबिलिटेशन

4. कोरी, जी. (2008)। ग्रुप काउंसलिंग, नई दिल्लीः सेंगेज लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड
5. ड्राइडन, डब्ल्यू. एंड फिलेंटमैन सी. (1994)। डवलपिंग काउन्सलर ट्रेनिंग, लंदनः सेज
6. फ्रैंकलिन, एस. फ्रीमैन (1962)। थ्योरी एंड प्रैक्टिसेज इन साइक्लोजिकल टेस्टिंग, नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड
7. गेलसो, सी. जे. और फ्रेट्ज, बी.आर. (1995)। काउन्सलिंग साइक्लोजी, बैंगलोरः प्रिसिन बुक
8. जॉर्ज, आर. आई. और क्रिस्टियाना टी. एस. (1990)। काउन्सलिंग थ्योरी एंड प्रैक्टिस, न्यू जर्सीः प्रेंटिस हॉल
9. गिब्सन, रॉबर्ट एल. और मिशेल, मैरिएन, एच. (2007)। इंट्रोडकशन टू काउन्सलिग एंड गाइडेंसः नई दिल्लीः पियर्सन प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया
10. हैकनी, एच. एल. और कॉर्मियर, एल.एस. (1996)। द प्रोफेशनल काउन्सलरः ए प्रोसेस गाइड टू हेलपिंग, बोस्टनः एलिन और बेकन
11. हार्डी रिचर्ड, ई. और गेल जॉन जी (1994)। ग्रुप काउन्सलिंग थेरेपी टेकनिक्स इन स्पेशल सेटिंग्सः स्प्रिंगफील्ड चार्ल्स सी. थॉमस
12. नोल्स जोसेफ डब्ल्यू (1964)। ग्रुप काउन्सलिंग, एंगलवुड क्लिफ्सः प्रेंटिस हॉल, यूएसए
13. लुईस, एम. डी., मेयर, आर एल एंड लुईस,जे. ए. (1986)। एन इंट्रोडकशन टू काउंसलिंग, इलिनासः एफ.ई. पीकॉक पब्लिशर्स
14. मेनेट, एम. ई. (1963)। गाइडेंस एंड काउन्सलिंग इन ग्रुप्स, लंदनः मैकग्रॉ हिल बुक कंपनी
15. पिएत्रो, जे. जे., हॉफमैन, ए. और स्पिल्ट, एच. एच. (1984)। काउन्सलिंगः एन इंट्रोडकशन, बोस्टनः ह्यूटन मिफ्लिन कंपनी
16. रोजर्स सी. आर.ः क्लाइंट सेंट्रड थेरेपी, मिफ्लिन
17. शेरटजर, बी. और स्टोन एस. सी.(1974)। फंडामेंटल्स ऑफ काउन्सलिंग, बोस्टनः ह्यूटन मिफ्लिन कंपनी
18. शेरजर, बी. स्टोन एस. जी. (1980)। फंडामेंटल्स ऑफ काउन्सलिंग। बोस्टनः ह्यूटन मिफ्लिन कंपनी
19. टॉलबर्ट, ई.एल. (1978)। एन इंट्रोडकशनटू गाइडेंस, टोरंटोः लिटिल ब्राउन एंड कंपनी

मॉड्यूल 6: शोध, व्यावसायिक विकास और शैक्षणिक नेतृत्व

उद्देश्य:

प्रतिभागियों को शोध कौशल, नेतृत्व गुणों को प्राप्त करने में सक्षम बनाना और स्वयं के व्यावसायिक विकास को सुविधाजनक बनाना।

अपेक्षित अधिगम परिणाम:

पाठ्यक्रम के अंत में प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- शैक्षिक नेतृत्व की गतिशीलता को समझने हेतु
- शिक्षण और समग्र व्यावसायिक विकास में शोध की भूमिका पर परिवर्तन करने में
- शोध करने में ईमानदारी और आचार–नीति सुनिश्चित करने के तरीकों पर चर्चा करने में
- अंतः विषयक, सहयोगी शोध अध्ययन और कार्रवाई शोध करने के विचारों को सूचीबद्ध करने में
- सार्थक शोध में काम के लिए कार्यनीति तैयार करने

फोकस क्षेत्र/ विषय:

- शिक्षण और शोध दोनों के बीच संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए दोनों पर विचार करना
- पाठ्यक्रम स्तर पर प्रभावी शिक्षण–शोध सम्बन्धों का निर्माण
- विशिष्ट विषयों में अंतर–विषयक और सहयोगी शोध परियोजनाओं की रूपरेखा बनाना
- विषय–विशिष्ट शोध का संचालन करना: शोध में छात्रों को शामिल करते हुए एक शोध प्रस्ताव की योजना बनाना, और लिखना व अवसरों का वित्तपोषण करना
- शोध के मात्रात्मक, गुणात्मक और मिश्रित तरीके
- शोध और साहित्यिक चोरी की जाँच के लिए सॉफ्टवेयर साधन: लेटेक्स, ग्रंथ सूची, समाप्ति नोट, ग्रंथ पाठ, टर्निटिन, सांख्यिकीय, अन्य मुक्त–स्रोत साधन; सार्वजनिक क्षेत्र के आंकड़े
- पीएचडी गाइड बनने की तैयारी करना: भूमिकाएं और जिम्मेदारियां
- सामाजिक रूप से उपयोगी शोध हेतु समुदायिक आवश्यकताओं का मानचित्रण करना।
- शोध आचार नीति–शैक्षिक ईमानदारी और अखंडता, सहमति और इसके आशय, एक थीसिस को प्रामाणिक प्रकाशन तैयार सामग्री में परिवर्तित करना
- शिक्षण और स्वयं के विषय में विकास सहित अद्यतन बने रहने के लिए कार्यनीतियों का महत्व
- व्यावसायिक शिक्षकों और विषय से संबन्धित संगठनों के साथ जुड़ना– आवश्यकता है, व्यावसायिक विकास के लिए उनमें से सर्वोत्तम कैसे निकालें, शिक्षकों के व्यावसायिक उत्थान में संगठनों की भूमिका के मामले/उदाहरण
- सतत व्यावसायिक विकास के अवसर– राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, सरकारी और गैर सरकारी
- सामरिक और परिवर्तनकारी नेतृत्व के बुनियादी ढांचे
- संगठन की आकांक्षा और कार्यनीति का विकास करना
- नेतृत्व के विभिन्न प्रकार – परिणाम–उन्मुख नेतृत्व, रचनात्मक नेतृत्व, रचनात्मक परिणामों के लिए अग्रणी होना
- गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के लिए शैक्षिक प्रमुखों और शिक्षकों की भूमिका

कार्यकलापः

स्व–मूल्यांकन और फीडबैक फॉर्म, आईसीटी आधारित अभ्यास, विशिष्ट विषयों में अच्छे शोध परिणाम के मामला आधारित विचार–विमर्श, विचार–विमर्श के साथ विशेषज्ञ से वार्ता, शोध प्रस्ताव लेखन अभ्यास, साहित्यिक चोरी सॉफ्टवेयर का उपयोग करना; शोध पर लघु वीडियो; अंतः विषयक कार्रवाईः एक सामान्य विषय पर चर्चा करने के लिए विभिन्न विषयों के विशेषशज्ञों व्यक्तियों द्वारा संयुक्त सत्र, शोध आचारनीति समिति के विशेषशज्ञ व्यक्ति।

आकलनः

सीखने के परिणामों का आकलन संस्थागत मामले के अध्ययन, मसौदा शोध प्रस्ताव तैयार करने, विभिन्न साधनों के माध्यमों से साहित्यिक चोरी को पहचानने, सहकर्मी मूल्यांकन, परिवर्तन/स्व–आकलन के माध्यम से किया जा सकता है।

सुझाए गए पाठः (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. कील, डी. एच. 2015। क्रीएटिंग ए फैकल्टी लीडरशिप डवलपमेंट प्रोग्राम–देखें–http: //www-uog-edu/sites/default/files/1215&faculty&leadership&md-pdf
2. बॉण्ड, श्रेयल, एल अकैमेडिक लीडरशिप (मॉड्यूल –2)। देखें–https: //www-acu-ac-uk/focus&areas/gender&programme/academic&leadership
3. जेरेन हुइसमैन, मैल्कम टाइट (2016)। थ्योरी एंड मेथड इन हायर रिसर्च, एमराल्ड ग्रुप पब्लिशिंग
4. डीन ओ. स्मिथ (2011)। मैनेजिंग द रिसर्च यूनिवर्सिटी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
5. जेनिफर एम. केस (2013). रिसर्चिंग स्टूडेंट लर्निंग इन हायर एजुकेशनः ए सोशल रियलिस्ट, रूटलेजशिन,
6. जे. सी., अरिमोटो, ए., कमिंग्स, डब्ल्यू.के., टीक्लर, यू (ईडीएस) (2014)। टीचिंग एंड रिसर्च इन कंटेम्परेरी हायर एजुकेशनः सिस्टम, एक्टिविटीज एंड रिवार्ड्स, स्प्रिंगर
7. अमांडा एच. गुडॉल (2009)। सोकरेट्स इन बोर्डरूमः व्हाइ रिसर्च यूनिवर्सिटीज शुड बी लेड बाई टॉप स्कोलर्स, प्रिंसटन युनिवर्सिटी प्रेस
8. जेनकिंस, ए, रेसना बी और रोजर एल (2003) टीचिंग इन हायर एजुकेशनः लिंकिंग टीचिंग विद रिसर्च। कोगन पेज
9. पचेरी, डी. (2013)। टीचिंग टू अवॉइड प्लेगिएरिज्मः हाउ तो प्रमोट गुड सोर्स यूज। मैकग्रा–हिल एजुकेशन (यूके)। चैप्टर्सः 1, 5, अपेंडिक्स ए

मॉड्यूल 7: शैक्षिक ईमानदारी

उद्देश्यः

प्रतिभागियों के बीच शैक्षणिक ईमानदारी को बढ़ावा देना ताकि उच्चतर शिक्षा संस्थानों से भरोसेमंद और उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक परिणाम प्राप्त हों।

अधिगम परिणामः

पाठ्यक्रम के अंत में प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगेः

- उनके शैक्षिक व्यवहारों में साहित्यिक चोरी से बचना या बचने में
- उनसे अपेक्षित शैक्षिक मानकों को पहचानने और बनाए रखना
- शोध और शैक्षिक प्रकाशन में ईमानदारी और कठोरता का पालन करना

फोकस क्षेत्र/विषयः

- शैक्षिक ईमानदारी को परिभाषित करना
- सम्मान कोड और सम्मान प्रतिज्ञाः आवश्यकता और महत्व। कुछ सुस्थापित संस्थानों के सम्मान कोड का मामला विश्लेषण
- साहित्यिक चोरीः प्रकार, मुद्दे और परिणाम। छात्रों और शिक्षकों को साहित्यिक चोरी से बचाने के तरीके और साधन
- शैक्षणिक मामलों में धोखाः कारण, प्रकार और परिणाम
- सूचना प्रौद्योगिकी के समय में शैक्षणिक अखंडता की चुनौतियां, सूचना साक्षरता, आवश्यकता और महत्व।
- शोध का नीतिपरक आचरण, प्रकाशन आचार नीति, अनधिकृत सहयोग के मुद्दे
- शैक्षणिक बेईमानी के परिणाम
- अकादमिक ईमानदारी को बढ़ावा देने के तरीके, उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक और शोध परिणाम में शैक्षणिक अखंडता का महत्व

कार्यकलापः

व्याख्यान, सामूहिक विचार–विमर्श, पैनल विचार–विमर्श, सूचना साक्षरता और साहित्यिक चोरी के साधन और इस प्रयोजन के लिए अन्य सॉफ्टवेयर, वृत्तचित्रों, मामला अध्ययन के बारे में व्यावहारिक एवं क्रियाशील अनुभव।

आकलनः

नमूना ऑनर कोड का विकास, मौखिक प्रस्तुतियाँ, व्यावहारिक एवं क्रियाशील अनुभवों और लिखित सौंपे गए कार्य से संबंधित कार्यकलापों में भागीदारी।

सुझाए गए पाठ : (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. ब्रेटैग, ट्रेसी। (2016)। हैंडबुक ऑफ अकैडेमिक इंटेगरिटी। (ईडी)। स्प्रिंगर सिंगापुर
2. ट्रिसिया बर्ट्रम गैलेंट। (2008)। अकैडेमिक इंटेगरिटी इन ट्वेंटी–फर्स्ट सेंचुरीः ए टीचिंग एंड लर्निंग इंपेरेटीवः एएसएचई हायर एजुकेशन रिपोर्ट, वॉल्यूम33, नंबर 5। जोसी–बैस पब्लिचर्स
3. बर्नार्ड ई. व्हिटली जूनियरय पेट्रीसिया कीथ–स्पीज। (2002)। अकैडेमिक डिसओनेस्टीः एन एजुकेटरस गाइड। लॉरेंस एर्लबम एसोसिएट्स
4. पेट्रेस, केनेथ सी (2003)। : अकैडेमिक डिसओनेस्टीः ए प्लेग ऑन पोर प्रोफेशन। एजुकेशन, वॉल्यूम 123, नंबर 3, स्प्रिंग
5. लैंग, जे.एम. (2013)। चीटिंग लेसन्सः लर्निंग फ्रोम अकैडेमिक डिसओनेस्टी/जेम्स एम. लैंग.केंब्रिज, मैसाचुसेट्सः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
6. चड्ढा, पी. (2018)।एथिक्स इन कंपीटेंट रिसर्च। पोथी
7. चड्ढा, पी. (2018)। प्लेगिएरिज्म ऑफ साइंटिफिक आइडियाज। पोथी

मॉड्यूल 8: संवैधानिक मूल्य, मानव अधिकार और मौलिक कर्तव्य

उद्देश्य:

संवैधानिक मूल्यों, मानव अधिकार और मौलिक कर्तव्यों के प्रति संवेदनशील बनाना जो प्रतिभागियों को एक समतावादी और सतत समाज की आवश्यकता को पूरा करने में सहायता करते हैं।

अधिगम (लर्निंग) के परिणाम:

मॉड्यूल के पूरा होने के पश्चात प्रतिभागी:

- संवैधानिक मूल्यों, मानव अधिकार, मौलिक कर्तव्य और शिक्षा के बीच संबंध को समझेगें
- कक्षा शिक्षण और अनुसंधान में संवैधानिक मूल्यों और स्थिरता के विचारों को एकीकृत करने के तरीकों और कार्यनीतियों के महत्व की सराहना करने में सक्षम होंगे

फोकस क्षेत्र/विषय:

- संवैधानिक मूल्यों और शिक्षा के बीच संबंध
- मानव अधिकार
- मौलिक कर्तव्य
- शिक्षण, अधिगम और शोध के उद्देश्य
- कक्षा में जाति, वर्ग और लिंग – पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों, कक्षा प्रक्रियाओं, शोध में पूर्वाग्रह की जांच करना
- अधिक समान और न्यायपूर्ण समाज बनाने में शिक्षा की भूमिका
- रूढ़िवादी सामान्यकरण से परे देखना – सम्मान और सहिष्णुता सीखना
- 'सार्वभौमिक' मूल्यों का महत्व – सत्य, धार्मिक आचरण, शांति, अहिंसा
- 'सार्वभौमिक' मूल्यों में पेशेवर आचार नीति पर एंकरिंग

सुझाए गए कार्यकलाप:

विशेषज्ञ के नेतृत्व में वार्ता और खुला विचार– विमर्श, विशिष्ट प्रश्नों पर बुद्धिशीलता सत्र, मामला अध्ययन, समूहों में एक सतत परिसर योजना, वृत्तचित्र बनाना।

आकलन:

सीखने के परिणामों का आकलन मामला अध्ययन तैयार करके, मूल्य संघर्षों वाले सामूहिक विचार–विमर्श, आमंत्रित वार्ता के माध्यम से किया जा सकता है।

सुझाए गए पाठ: (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. आडवाणी, एस. (1996)। एजुकेटिंग द नेशनल इमेजिनेशन। इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली। 31 (31): 2077–82
2. भट्टाचार्जी, एन. (1999)। 'थ्रू द लूकिंग ग्लास: जेंडर सोसिएलाइजेशन इन प्राइमरी स्कूल' थ्योरी, रिसर्च एंड अपलिकेशंसइन इंडिया, एडिटेड बाई टी.एस. सरस्वती, 336–55। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन

3. आईएआरयू (2014)। ग्रीन गाइड फॉर यूनिवर्सिटीज। इन्टरनेशनल अलायांस ऑफ रिसर्च युनिवर्सिटीज (आईएआरयू)

4. आईएससीएन (2016)। वर्किंग ग्रुप हैंडबुक डेमोण्स्ट्रेटिंग ग्लोबल कैंपस सस्टेनेबिलिटी लीडरशिप। आईएससीएन वर्किंग ग्रुप हैंडबुक। इंटरनेशनल सस्टेनेबल कैंपस नेटवर्क

5. वेलस्कर, पी. (2005)। एजुकेशन स्ट्रेटिफिकेशन, डोमिनेंट आइडियोलॉजी एंड द रिप्रोडकशन ऑफ डिसएडवांटेजइन इंडिया। इन अंडरस्टैंडिंग इंडियन सोसाइटीः द नॉन–ब्राह्मणिक पर्सपेक्टिव, एडिटेड बाई एस.एम. दहीवाले, 196–220। नई दिल्लीः रावत

6. सूसी थारू एंड ए. सुनीता, टुवर्ड्स वर्ल्ड ऑफ इक्वल्स, ए बाइलिंगुएल टेक्स्टबुक ऑन जेंडर सेंसिटाइजेशन (2015) तेलुगु अकैडमी, हैदराबाद

मॉड्यूल 9: पर्यावरण चेतना और सतत विकास लक्ष्य

उद्देश्य:

प्रतिभागियों के बीच पर्यावरण चेतना तथा सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के बारे में जागरूकता विकसित करना और एसडीजी के संबंध में भारत की वर्तमान स्थिति और भविष्य की क्षमता के महत्वपूर्ण मूल्यांकन को बढ़ावा देना।

अपेक्षित अधिगम (लर्निंग) के परिणाम:

मॉड्यूल के अंत में प्रतिभागी:

- भविष्य के समाज के लिए पर्यावरण चेतना और एसडीजी की भूमिका की सराहना करने
- एसडीजी प्राप्त करने की दिशा में राष्ट्र की प्रगति में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानने
- एसडीजी तथा पर्यावरण चेतना को उनके शिक्षण और अनुसंधान में उचित रूप से एकीकृत करके इस भूमिका का एहसास करने में सक्षम हो जाएंगे

विषय/फोकस क्षेत्र:

- बेहतर समाज के लिए निम्न सतत विकास लक्ष्यों में से प्रत्येक का महत्व यहां श्रेणीबद्ध किया गया है
- स्वास्थ्य और पर्यावरण– अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण, सतत शहर और समुदाय, जिम्मेदार खपत और उत्पादन, जलवायु कार्यवाही, जल के नीचे जीवन, भूमि पर जीवन, किफायती और स्वच्छ ऊर्जा, स्वच्छ पानी और स्वच्छता, स्वच्छ भारत मिशन, आदि जैसी पहलों के बारे में जानकारी
- अर्थव्यवस्था– उम्दा कार्य और आर्थिक विकास, उद्योग नवाचार और बुनियादी ढाँचा
- सामाजिक न्याय– गरीबी नहीं हो, कोई भूखा नहीं हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, असमानता में कमी, शांति, न्याय और सुदृढ़ संस्थाएं, लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भागीदारी
- एसडीजी प्राप्त करने के लिए राष्ट्र के समर्थन में शिक्षकों और उच्चतर शिक्षा संस्थानों की भूमिका, एक बेहतर समाज के लिए एसडीजी की आवश्यकता, एसडीजी के संबंध में भारत की वर्तमान स्थिति, क्या उच्चतर शिक्षा को संवैधानिक मूल्यों के साथ संबंधों की खोज करने, एसडीजी को वर्ष 2030 तक प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक नीति की समीक्षा करने के लिए उपयुक्त रूप से श्रेणीबद्ध किया गया है

सुझाए गए कार्यकलाप:

व्याख्यान विधि, बुद्धिशीलता सत्र, मामला अध्ययन के साथ परस्पर संवादात्मक सत्र, वृत्तचित्र, समूहों में सतत परिसर योजना बनाना।

आकलन:

सीखने के परिणाम को स्व–आकलन, फीडबैक, एसडीजी के महत्व पर बोलने की क्षमता, एसडीजी और इसके विभिन्न आयामों पर संक्षिप्त टिप्पणियां तैयार करने की क्षमता के माध्यम से मापा जाए।

सुझाए गए पाठ (यह एक संपूर्ण सूची नहीं है)

1. डंकन फ्रेंच और लुई जे. कोत्जे (2018)। सस्टेनेबल डवलपमेंट गोल्स: लॉ, थ्योरी एंड इम्प्लीमेंटेशन। एडवर्ड एल्गर पब्लिशिंग। आईएसबीएन: 978 1 78643 875 1
2. यूनाइटेड नेशंस। (2018)। द सस्टेनेबल गोल्स। यूएन पब्लिकेशंस। आईएसबीएन –13: 978–9211013696
3. https://www.un.org/sustainabledevelopment/sustainable_development_goals/

मॉड्यूल 10: कार्यनीति योजना और प्रबंधन

उद्देश्य:

प्रतिभागियों को तेजी से बदलती परिस्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटने, आंतरिक प्रबंधन और संस्थागत निष्पादन में सुधार करने योग्य बनाना।

सीखने के परिणाम: पाठ्यक्रम के अंत में प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करने
- विजन/मिशन दस्तावेज तैयार करने
- एसडब्ल्यूओटी का विश्लेषण करने
- कार्य योजना और उसके प्रबंधन को समझने (बॉटम–अप/विकेंद्रीकृत योजना, लोकतांत्रित योजना और परिप्रेक्ष्य योजना का अर्थनिर्धारित करना और इन्हें कैसे कार्यान्वित करना है।)
- शिक्षकों और संस्थानों में नामांकित छात्रों (इसमें निम्न निष्पादन करने वाले छात्रों, विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों, लिंग, जाति, अल्पसंख्यक आदि के साथ–साथ कार्यनीति योजना में वंचित क्षेत्रों की आवश्यकताओं के दृष्टिकोण से विशेष विचार को शामिल करने) की गतिशील स्थिति को समझने/समझना
- राज्य और संस्थागत स्तरों पर समन्वय के लिए कार्यनीति योजना तैयार करने में या कैसे तैयार करें
- भविष्य की कल्पना–विकास के लिए संगठन की आकांक्षा और कार्यनीति को विकसित करना
- उत्कृष्टता का रोडमैप विजन कार्यनीति से विकसित करना
- एक साझा विजन बनाना और विकसित करना

फोकस क्षेत्र/विषय:

कार्यनीति योजना:

- एक साझा दृष्टि बनाना और विकसित करना
- विजन/मिशन दस्तावेज तैयार करना, राज्य और संस्थागत स्तरों पर कार्यनीति योजना तैयार करना
- लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करना
- नियोजन को समझना: बॉटम–अप/विकेंद्रीकृत योजना, लोकतांत्रित योजना और परिप्रेक्ष्य योजना का अर्थ और इन्हें कैसे कार्यान्वित किया जाए
- निम्न निष्पादन करने वाले छात्रों, विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों, लिंग, जाति, अल्पसंख्यक आदि के साथ–साथ पिछड़े क्षेत्रों की आवश्यकताओं के दृष्टिकोण को समझना
- भविष्य की कल्पना– विकास के लिए संगठन की आकांक्षा और कार्यनीति विकसित करना
- विजन कार्यनीति से उत्कृष्टता का रोडमैप
- कार्य योजना और उसके प्रबंधन को समझना
- संस्थानों में शिक्षकों और नामांकित छात्रों की गतिशील स्थिति को समझना: काम के साथ मुकाबला (Coping) तंत्र, अंतर और अतः विश्वविद्यालय समन्वय की कार्यनीति

कार्यकलापः

बुद्धिशीलता सत्र, सामूहिक कार्यकलाप और प्रस्तुतीकरण, मॉडरेटर के नेतृत्व में विचार–विमर्श, व्यक्तिगत कार्यकलाप, प्रश्नोत्तर सत्र, मामला अध्ययन, सामूहिक विचार–विमर्श, पैनल विचार–विमर्श, व्यावहारिक और क्रियाशील अनुभव।

आकलनः

संस्थागत प्रभावशीलता और सीखने के परिणामों के लिए आकलन मेट्रिक्स का विकास। प्रशिक्षु शिक्षक की कार्यनीति योजना के कौशल में वृद्धि को प्रकट करने के लिए सौंपा गया काम।

सुझाए गए पाठः (यह एक विस्तृत सूची नहीं है)

1. यूनिवर्सल स्ट्रैटेजिक प्लान http://hepa.ust.hk/2014/images/Sriven%20Naidu_.pdf
2. स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट एंड युनिवर्सिटीज' इन्स्टीट्यूशनल डवलपमेंट
3. http://www.eua.be/eua/jsp/en/upload/Strategic_Manag_Uni_institutional_Devlpt.1069322397877.pdf
4. [PDF] लेपफ्रॉग प्रिंसिपल एंड पैराडिज्म शिफ्ट्स इन एजुकेशन
5. http://leapfrog.umn.edu/Documents/WangParadigmShifts.pdf

आभारोक्ति

गुरु–दक्षताः शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम (एफआईपी) के लिए सामग्री रूपरेखा को मानव संसाधन विकास मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किया गया है। सामग्री रूपरेखा के लिए आधार दस्तावेज एक समिति द्वारा विकसित किया गया था, जिसमें प्रो. रजनीश जैन, सचिव, यूजीसी (अध्यक्ष); प्रो. अवधेश कुमार सिंह, कुलपति, ऑरो विश्वविद्यालय, गुजरात (सदस्य); प्रो. ए.एस. रघुबंशी, बीएचयू, वाराणसी (सदस्य); डॉ. ए. के. सिंह, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (सदस्य); प्रो. दयानंद संसनवाल (सेवानिवृत्त प्रोफेसर) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (सदस्य); प्रो. किरण माथुर (सेवानिवृत्त प्रोफेसर) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल (सदस्य); डॉ. उषा त्रिपाठी, मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र, बीएचयू, वाराणसी (सदस्य); प्रो. मालापति के. जनार्दनम, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा (सदस्य); प्रो. कविता शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (सदस्य) और डॉ. अर्चना ठाकुर, संयुक्त सचिव, यूजीसी, नई दिल्ली शामिल थे।

उपर्युक्त समिति द्वारा तैयार किए गए एफआईपी मॉड्यूल के नमूने का उपयोग करते हुए, शिक्षक प्रेरण कार्यक्रम की सामग्री रूपरेखा को एक विशेषज्ञ समूह द्वारा अंतिम रूप दिया गया था जिसमें प्रो. भूषण पटवर्धन, उपाध्यक्ष, यूजीसी (अध्यक्ष); प्रो. एल.एस. शशिधारा, आईआईएसईआर, पुणे (सदस्य); डॉ. अमृत जी. कुमार, केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड, केरल (सदस्य); डॉ. जी.वी. शर्मा, आईआईटी, हैदराबाद (सदस्य); डॉ. इंदु प्रसाद, निदेशक (स्कूल शिक्षा) अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, बैंगलोर (सदस्य); डॉ. एन. श्रवण कुमार, संयुक्त सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली (मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा नामांकित); डॉ. शकीला शम्सू, ओएसडी (एनईपी), उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (सदस्य) और डॉ. अर्चना ठाकुर, संयुक्त सचिव, यूजीसी, नई दिल्ली (समन्वयक) शामिल थे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस दस्तावेज को तैयार करने में उपर्युक्त समिति के सदस्यों के बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करता है।

सत्यमेव जयते

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

गुणवत्ता अधिदेश

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

उद्देश्य

- छात्रों के लिए स्नातक परिणामों में सुधार
- छात्रों का समाज / उद्योग वर्ग के साथ सामंजस्य
- छात्रों को आवश्यक व्यावसायिक और व्यवहार कौशल
- यह सुनिश्चित करना कि शिक्षक रिक्तियाँ स्वीकृत क्षमता से 10% से अधिक न हों
- वर्ष 2022 तक, प्रत्येक संस्थान को न्यूनतम 2.5 का NAAC स्कोर अर्जित करना ह

उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा निम्नलिखित पहल की जानी हैं :-

1. विद्यार्थियों के लिए आरंभिक प्रेरण कार्यक्रम-दीक्षारंभ।
2. अध्ययन- निष्कर्ष आधारित पाठ्यक्रम रचना-नियमित अंतराल पर पाठ्यक्रम में परिशोधन (LOCF)।
3. प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया हेतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना -MOOC, और ऑनलाइन उपाधियाँ।
4. विद्यार्थियों हेतु व्यावहारिक कौशल-जीवन कौशल
5. प्रत्येक संस्थान हेतु समाजिक एवं उद्योग वर्ग से संपर्क, प्रत्येक संस्थान, ज्ञान के परस्पर आदान-प्रदान तथा ग्रामीण समुदायों की समग्र सामाजिक/आर्थिक समुन्नति हेतु कम से कम 5 गावों का अभिग्रहण करेगा। नियोजन योगयता में सुधार करने के लिए विश्वविद्यालय-उद्योग के बीच संपर्क को बढ़ावा देना।
6. परीक्षा प्रणाली में सुधार-परिकल्पना की जांच एवं अनुप्रयोग।
7. पाठ्यक्रम के पूरा होने के पश्चात, विद्यार्थि प्रगति की जानकारी रखना व पूर्व छात्र नेटवर्क।
8. संकाय प्रेरणा कार्यक्रम (FIP) शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या कार्यक्रम (ARPIT) तथा शिक्षा प्रशासकों के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण (LEAP)।
9. भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए परा-विद्या संबंधी अनुसंधान योजना (STRIDE) और कन्सोर्टियम फॉर एकेडेमिक एंड रिसर्च एथिक्स (CARE)
10. गैर प्रत्यायित संस्थानों को मार्गदर्शन उपलब्ध कराना (परामर्श)

उच्चतर शिक्षा संस्थान (HEIs) गुणवत्ता सुधार हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को 2022 तक प्राप्त करने का प्रयास करेंगे

विद्यार्थियों के लिए स्नातक परिणामों में सुधार, जिससे की उनमें से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थी अपने लिए रोजगार/ स्व-रोजगार सुरक्षित कर सकें, या उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाएँ।

विद्यार्थियों का समाज/उद्योग वर्ग के साथ सामंजस्य स्थापित करना जिससे कि कम से कम दो-तिहाई छात्र, संस्थानों में अपने अध्ययन के दौरान, सामाजिक गतिविधियों मे भागीदारी कर सकें।

विद्यार्थियों को आवश्यक व्यावसायिक और व्यवहार कौशल का प्रशिक्षण प्रदान करन जैसे सामूहिक कार्य, सम्प्रेषण कौशल, नेतृत्व कौशल, समय-प्रबंधन कौशल आदि मे पारंगत करना, मानवीय मूल्यों एवं व्यवसायगत नीतियों का संचार करना, नवप्रवर्तन / उद्धमशीलता तथा विद्यार्थियों मे समालोचनात्मक चिंतन की भावना को जाग्रत करना तथा इन प्रतिभाओं के प्रदर्शन के लिए अवसर प्रदान करना।

यह सुनिश्चित करना की शिक्षक रिक्तियों में किसी भी समय पर, स्वीकृत क्षमता के 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि नहीं हो तथा शत-प्रतिशत शिक्षक अपने संबन्धित ज्ञान क्षेत्र में नवीनतम एवं उभरती जानकरियों एवं शिक्षण विधियों का ज्ञान रखते हों, जिससे वो विद्यार्थियों को प्रभावशाली तरीके से विषय को समझा सकें।

वर्ष 2022 तक, प्रत्येक संस्थान, न्यूनतम 2.5 प्राप्तांकों सहित राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा प्रमाणित हो।

उच्चतर शैक्षिक संस्थानों द्वारा की जाने वाली पहल

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

University Grants Commission

quality higher education for all

www.ugc.ac.in

@ugc_india